संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-12, अंक-2 **अप्रैल-जून 2025 (भाग-2)** **आईएसएसएन : 2348-5639**

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सह-संपादक
• डॉ. सुमन रानी

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल

• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. ऊषा रानी, शिमला
• डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
• डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
• डॉ. संजय कुमार, रांची
• डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति वार्षिक 2500/- रु.

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय 6

शिक्षा और कौशल विकास : युवा पीढ़ी के लिए तैयारी 2047 के संदर्भ में एक अध्ययन 10
दीपा देवी

Contribution of National Education Policy 2020 towards Developed India 2047 14
Dr. Dilip Kumar Parsendiya

DESMIDS FROM JHANSI (UP) INDIA 18
Iqbal Habib

भारत 2047 का डिजिटल समाज : शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल जागरूकता, साक्षरता और साइबर सुरक्षा के संदर्भ में एक अध्ययन 24
ललिता सैनी

2047 का विकसित भारत प्रशासन के कदम व रणनीतियां 29
डॉ. नीतू सिमर

Viksit Bharat @2047: Concept and Challenges 33
Padmja Ranga

Role of Micro Small and Medium Enterprise (MSME) in Indian Economy 39
Dr. Pooja Priya

भारत: 2047: सशक्त भविष्य की दिशा में - चुनौतियां और रणनीतियाँ 45
मोहम्मद इबादुर रहमान खान
डॉ. मौसमी परिहार

सशक्त भारत के बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा का योगदान– चुनौतियां एवं अवसर (हिंदी गृहपत्रिकाओं के विशेष संदर्भ में) 52
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
श्री एम. संजीवी कनी

COOPERATIVE FEDERALISM AND PARADIPLOMACY: ENABLING INDIAN STATES FOR GLOBAL LEADERSHIP BY 2047 58
Shahzeen Shoaib Afsar

भारत 2047: सशक्त भविष्य की दिशा में- चुनौतियाँ, अवसर और रणनीतियाँ 66
डॉ. शारदा कुमारी

भारत 2047 : सशक्त भविष्य की दिशा में -चुनौतियां, अवसर और रणनीतियां (बच्चे और बाल साहित्य के संदर्भ में) 69
वेंकट शिल्पा काकि
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारत 2047 : सशक्त भविष्य की दिशा में -चुनौतियां, अवसर और रणनीतियां (बच्चे और बाल साहित्य के संदर्भ में)

वेंकट शिल्पा काकि
(शोधार्थी)
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया
ईमेल : silpa-kv@gmail.com

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
(शोध निर्देशिका)
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया
ईमेल : hodhindi@velsuniv.ac.in

भारत हमारा जन्म-भूमि हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सदा आध्यात्मिक और धार्मिक मार्गदर्शन का केंद्र रहा है। काल गति में इस देश ने कई महायुद्ध और गुलामी को देखा है। फिर भी अहिंसा के बल पर गाँधी जी के मार्गदर्शन में पूरा देश एक होकर स्वतंत्रता प्राप्त किया है। स्वतंत्रता आंदोलन जनमानस तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है साहित्य। सहित्य देश के विकास पथ में सदैव अपनी भूमिका निभाया है।

अतीत का गौरव गान, महावीरों के गुणगान, तत्कालीन देश की दयनीय दशा, स्वर्णिम भविष्य की कल्पना, आदि का परिचय भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों ने किया हैं। इन्होंने अंग्रेज के शोषण और नवीन देश की कल्पना के द्वारा जनता में स्वतंत्रता की आस्था जागृत किया हैं। द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने इतिहासिक महापुरुषों के नवीन चित्रण के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के दीपक को अत्यंत प्रकाशवान किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, आदि ने अपने साहित्य के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में हर भारतवासी को भाग लेने की प्रेरणा दिया हैं। देश के विकास में साहित्य का अप्रतिम योगदान हैं। अर्थात् देश की बदलती परिस्थिति का चित्रण हमें साहित्य के माध्यम से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का 'भारत-भारती' और माखनलाल चतुर्वेदी का 'पुष्प की अभिलाषा', सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', आदि स्वतंत्रता आन्दोलन को तेज किया है। शिवमंगल सुमन, रामनरेश त्रिपाठी, रामधारीसिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, जयशंकर प्रसाद, बदरीनाथ चौदरी 'प्रेमघन', नाथूराम शर्मा शंकर, गायप्रसाद शुक्ल स्नेही, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय आदि अनेक-अनेक उल्लेखनीय साहित्यकार हैं जिन्होंने देशवासियों में देशप्रेम को जगाया हैं।

देशप्रेम ही नहीं देश का इतिहास, संस्कृति, परंपरा, धर्म, नीति आदि को पीड़ी दर पीड़ी पहुँचाने में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाया हैं। अतःदेश की उन्नति में साहित्य की गंभीरता का परिचय हमे मिलता हैं।

किसी भी देश का उज्वल भविष्य आज के बच्चों पर निर्भर हैं। यानि आज के बच्चे भावी देश का निर्णायक है। अर्थात् वर्तमान समय के बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, सक्रिय, कल्पनाशील, संवेदनशील, देशप्रेमी, नीतिवान, संस्कारवान, आदि बनाना आवश्यक है। इस कार्य में माता-पिता के साथ बाल साहित्य का भी अहम भूमिका है। इस विषय की गवेषणा से यह स्पष्ट होता है कि जो साहित्य बालकों के लिए लिखा जाता है, वह बाल साहित्य है। यह साहित्य मूल रूप से बच्चों से जुड़ी है, परंतु यह ऐसा साहित्य है जो देश और समाज के भविष्य रूप को निर्धारित एवं निश्चय करता है।

बाल साहित्य के बारे में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम और जवाहर 'इंदु' ने अपना विचार व्यक्त किया हैं कि "बाल मानोविज्ञान बाल साहित्य लेखन की कसौटी है। बाल मानोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लेखन के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"

बाल जगत प्रौढ़ से भिन्न और अनुपम होता है, वे उनके सामने उपस्थित हर वस्तु या घटना को जानने के लिए उत्सुक होते हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्पष्ट किया कि 'बाह्य वातावरण के जीवन से शिशु प्रभावित होकर अपने स्वभाव में परिवर्तन पाता है।' बालमानस कोमल, चंचल, जिज्ञासु और निर्मल होता है। बच्चों को संस्कारयुक्त बनाना चाहिए; सद्गुण विकसी करना चाहिए; मानवीय मूल्य सिखाना चाहिए; यथार्थ जीवन से परिचय कराना चाहिए; उनमें अच्छे कार्य करने की गुण पनपना चाहिए। अतः बच्चों का सर्वांगीण विकास के लिए साहित्यकारों द्वारा ऐसा साहित्य लेखन की जरूरी है, जो उन्हें मनोरंजन, ज्ञान, नीति, जिज्ञासा की तृप्ति, सामाजिक जीवन से परिचय, आदि की शिक्षा प्रदान करने वाली हो। यह आसान कार्य नहीं है। सहित्यकार को सरल भाषा, बाल मनो रुचि, उनकी इच्छा, कल्पना, समस्या आदि को ध्यान में लेते हुए उन्ही के शब्दों में साहित्य की रचना करना अनिवार्य है।

अगर हम पाश्चात्य बाल साहित्य की ओर दृष्टिगोचर करें तो यह स्पष्ट होता है कि वे बाल मनोभावनाओं और विचारों को महत्व नहीं देते हैं। जैसे- जर्मन बाल साहित्य बच्चों को सिपाही बनने, युद्ध करने को प्रेरणा देता है। बच्चों के स्वाभाविक विकास पर फ़्रांस का बाल साहित्य जोर देता है। परंतु भारतीय साहित्य एक ही विचारधारा पर तुले नहीं है। इस प्रकार बाल साहित्य बालकों के सम्पूर्ण विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य, अपना पंख फैलाकर भारतेन्दु युग से वर्तमान युगतक विभिन्न प्रकारों में समृद्ध हुआ हैं। यथा कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवनी, एकांकी, आदि।

हिन्दी बाल साहित्य के उद्भव की मूल प्रेरणा संस्कृत साहित्य जैसे- पंचतंत्र, कथासरित सागर, जातक कथा हैं। क्रमशः उसके विकास की प्रेरणा आधुनिक युग में पाश्चात्य बाल साहित्य है। आधुनिक युग में बाल सखा, बाल भारती, नंदन, पराग, आदि कई बाल पत्रिकाएं पल्लवित और पुष्पित हुई हैं।

बाल कहानी सदियों से मौखिक रूप में विद्यमान हैं। बाल कहानी बाल मन के निकट पहुंचकर उनपर गहरा प्रभाव डालता है। इसी कारणवश आज भी कहानी प्रथा विद्यमान है। कहानी में कई प्रकार है। जैसे- ऐतिहासिक, पौराणिक, वैज्ञानिक, हास्य,व्यंग्य, फांतासी, परी, आदि। बच्चों को मनोरंजन और कल्पना जगत में विहार कराता है परी कहानियाँ। यह बच्चों में कल्पना शक्ति को जागृत करता है। साथ ही उन्हें विभिन्न मूल्यों की सिख प्रदान करती है। पाश्चात्य संस्कृति, यंत्रीकरण, आदि बच्चों के जीवन पर बड़ी प्रभाव डाल रहा है। परिणामवश मूल्य हमारे जीवन शैली से घट रहे हैं। अतः वर्तमान समय में मूल्यपरक कहानियों की अत्यंत आवश्यकता है।अर्थात् जिन आचरणों से हमारा जीवन प्रतिष्ठित होता है, जिन्हें हम जीकर प्रतिस्थापित करते हैं, जो ज्ञानपर आधारित अचरणात्मक तत्वों का समाहार है, उन्ही को मूल्य कहते हैं। वर्तमान समय के वरिष्ट बाल साहित्यकार प्रकाश मनुजी, परी कहानियों के माध्यम से यह कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

परी कहानियों के बारे में डॉ. सुरेन्द्र विक्रम कहते हैं 'बदलते हुए समय में परीकथाएं उतनी प्रासंगिक भले ही नहीं रह गई हैं, परंतु उनको अगर नई सोच, नयी संवेदना और कल्पना का पुट डालकर प्रस्तुत किया जाए तो बच्चों को अच्छी मानसिक खुराक मिल सकती है। अगर बच्चों को अच्छी खुराक साहित्य प्रदान करता है तो स्वाभाविक है कि उसकी गणना बाल साहित्य में की जानी चाहिए।' इस दृष्टि में आनेवाली चुनौतियों तथा समाधानों के बारे में प्रकाश डालने का लघु प्रयास इस लेक के माध्यम से किया गया है।

परिश्रम और हिम्मत

आज एकाकी परिवार की प्रथा के कारण बच्चे कई समस्याओं से गुजर रहे हैं। माँ और पिता अपने कार्यक्रमों में व्यस्त होने के कारण बच्चों के साथ समय बिताने और मृदुभाषन करने के लिए किसी के पास वक्त नहीं मिल रहा है। इसी विषय को प्रकाश मनु जी 'होमवर्क का चक्कर' कहानी में दर्शाया है। कहानी का मुख्य पात्र निक्का के माता- पिता दोनों नौकरीपेशे है। परिणामवश निक्का को पढ़ाई में मदद करने के लिए कोई नहीं होते है। निक्का होमवर्क किए बिना अपन समय टी. वी., कैरम, लूडो आदि में व्यतीत करता है। टीचर की डाँट से बचने के लिए होमवर्क पूरी करने की सोच में डूबा निक्का को एक आवाज सुनाई देता है कि "करना क्या है, मेहनत करो" निक्का आश्चर्य से देखा तो परी लोक से आया एक बौना नजर आता है। बौना कहता है -"तुम शुरू ही नहीं करते। शूर करो, तो दुनिया का कोई ऐसा सवाल नहीं, जो निकल न सके।" इस प्रकार बौना निक्का को मदद करता है।

परिणाम स्वरूप वह टीचर से शाबासी पता है—"शाबाश! तुम तो बहुत अच्छे लड़के हो।" निक्का का होसला बढ़ता है। बौने की सहायता के लिए निक्का धन्यवाद कहता हैं। और बौने ने निक्का से सहायता की जरूर के बारे में पूछने पर निक्का कहता है कि 'उसके साथ बात करने और खेलने के लिए आए।' इस प्रकार प्रकाश मनु जी इस छोटी सी कहानी के मध्ययम से बच्चों को मेहनत का महत्व और आत्मविश्वास की आवश्यकता के बारे में भी बताया है।

इसी प्रकार 'मुझे कुछ नहीं चाहिए' कहानी की मुख्य पात्र गोलकी और भाग्य परी के माध्यम से हिम्मत की महत्व के बारे में बताया। गोलकी बिना माँ- बाप के अकेली, अपनी प्यारी बकरी के साथ एक झोंपड़ी में रहती है। वह घर-घर काम करके अपना गुजरा करती है। भाग्य परी उसे वरदान देने के लिए तैयार होती है। परंतु गोलकी बताती है कि उसे काम करने में कोई कठिनाई नहीं है; इससे गुस्से में आकर भाग्य परी गोलकी को सबक सिखाने के चक्कर में अपनी जादू से गोलकी की बकरी को बीमार करती है। इसी कारणवश बकरी मर जाती है। गोलकी का घर गिराती है; गोलकी बीमार पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में भी गोलकी अपना वचन पर अडिग रहती है। गोलकी आप में सोचती है—"माँ, तू तो कहती थी, गोलकी कभी हिम्मत न हारना। हमेशा मेहनत की रूखी-सुखी खाना, पर लालच न करना। किसी से माँगना भी मत। तो अब क्या करूँ?" तभी उसे माँ की आवाज सुनाई दी। माँ कह रही थी-"चिंता न कर बेटी घर में रोटी न हो, तो सूखे चने पानी के साथ फाँक लेना। फिर बुखार उतर जाए तो काम पर चली जाना। रमिया काकि को बता देना। वे हमदर्द हैं, कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगी।" गोलकी और उसकी माँ के साथ हुई संवाद से भाग्यपरी की घमण्ड टूट जाती है। अपने जादू से गोलकी को सबकुछ वापस करके उसे धन्यवाद कहने के साथ-साथ वह कहती है—"मैं समझ गई कि धरती पर ऐसे मेहनती लोग भी हैं जिन्हें मेरे वरदान की कोई जरूरत नहीं है। जो सच्चे और मेहनती लोग हैं, भला उन्हें आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है?" इस प्रकार मनु जी जीवन में मेहनत और हिम्मत की अनिवार्यता को सरल भाषा शैली का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत किए है। यह कहानी इतनी संवेदनशील है कि बच्चों के मन में अपना स्थान बना लेती है।

अपने कौशल को पहचानिए

हमें अपना कौशल को पहचानना है। अर्थात् हमे स्वयं को सम्मान करना चाहिए। जो खूबियत हम में है इससे प्रसन्न होना चाहिए। यदि हम अपनी खूबियत को छोड़कर सिर्फ अपनी कमियों की तरफ ध्यान देंगे तो हम अपने आप पर हीन भावना से ग्रस्त हो जएंगे।

प्रकाश मनु जी की 'निक्का और तितली' कहानी इसी विषय को स्पष्ट करती है।कहानी का मुख्य पात्र तितली जो पार्क में निक्का के साथ खेलते हुए उससे दोस्ती करती है। निक्का तितली की सुंदर पंख देख कर बहुत खुश होता है। परंतु एक बार निक्का तितली को गाना गाने के लिए पूछने पर तितली, गाना गाने की कौशल उस में नहीं होने के कारण दुखी हो जाती है। निक्का द्वारा तितली की होसला बढ़ाने की कोशिश से तितली और दुखित हो कर वह आसमान बाबा के पास

पहुँच कर अपनी इस कमी की शिकायत करती है। तब आसमान बाबा कहते हैं कि "देखो भाई, सबको सब चीजें तो नहीं दी जा सकती हैं। तुम्हें हमने कितने खूबसूरत रंग दिए हैं, यह तो देखो न। ऐसे रंग भला किसके पास हैं।" इस प्रकार तितली अपनी खूबियत जानकार भी गाने की कुशलता उसमें नहीं होने के कारण बहुत कुढ़ जाती है। तितली की दुख से प्रेरित बाबा, उससे रंग लेकर गाने की कौशल देते हैं। रंगविहीन तितली निक्का के पास पहुँच कर गाना गाने के लिए तैयार होती है। परंतु बिना रंगों वाली तितली को देख कर निक्का उदास होकर कहा-"प्यारी तितली, मैं तो तुम्हें पहचाना ही नहीं....मुझे तो तुम पहले ही जैसे रंग-बिरंगे रूप में अच्छी लगती हो, भले तुम गाना न गाओ। तुम्हारे रंग क्या किसी गाने से कम हैं।" तितली अपनी खूबियत को समझ ती है और अपनी गलती सुधार लेती हैं। इस प्रकार मनु जी इस कहानी के द्वारा अपनी स्वाभाविक कौशल से खुश हो ने की शिक्षा बच्चों को देते हैं।

देश की विकास यात्रा में बच्चों को बाल साहित्य जैसा साथी मिलने पर उक्त यात्रा सुगम हिती है। उन्हें सही-गलत, अच्छाई-बुराई, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित, आदि को तराशने की क्षमता प्राप्त होती हैं। उनका सर्वांगीण विकास होता है। गाँधी जी मानते हैं 'ग्राम ही देश का जड़ है' वैसे 'बच्चे ही देश का भविष्य कहना गलत नहीं है।' उनका विकास देश का विकास है। उन्हे बाल साहित्य की सहायता से सक्षम और दक्ष बनाना हमारा चरम कर्तव्य है ताकि वे उत्तम व्यक्ति बनकर देश की उन्नति, प्रगति और विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करें।

मूल ग्रंथ

1. डॉ. आनंद बक्षी, हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, 2016, कानपुर
2. किस्सा एक मोटी परी का, प्रकाश मनु
3. अजब-अनोखी परीकथाएँ, प्रकाश मनु

वेब आलेख सूचि

1. https://hindi.webdunia.com/independence-day-special/contribution-of-poets-poets-and-writers-in-freedom-struggle-121081200041_1.html
2. https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/FHVA-(A)10.pdf
3. https://www.storyboardthat.com/genres/fairy-tales

सन्दर्भ

1. डॉ. आनंद बक्षी, हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 2016, पृ.सं.13
2. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.14
3. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.15
4. प्रकाश मनु, अजब-अनोखी परीकथाएँ, ट्राइडेंट पुब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं.13
5. प्रकाश मनु, अजब-अनोखी परीकथाएँ, ट्राइडेंट पुब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं.14
6. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.9
7. प्रकाश मनु, किस्सा एक मोटी परी का, ग्रंथ अकादेमी, नई दिल्ली, 2018, पृ.सं.9